[Shri Pranab Kumar Mukherjee].

(Amendment) Ordinance, 1975, as required under rule 71(1) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha.

12.11 hrs.

AGRICULTURAL REFINANCE CORPORATION (AMENDMENT) BILL*

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): On behalf of Shri C. Subramaniam, I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Agricultural Refinance Corporation Act, 1963.

MR. SPEAKER: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Agricultural Refinance Corporation Act, 1963."

The motion was adopted.

SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE: I introduce† the Bill.

अध्यक्ष महोदय : पं० कमलापति त्रिपाठी ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर) : अध्यक्ष महोदय, आप ने गृह मंत्री जी से कहा था कि बारपेटा चुनाव के उम्मीदवार की गिरफ्तारी के बारे में बयान देंगे....

अध्यक्ष महोदय : वह आयेंगे तो बतला दूंगा ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : कब आयेंगे ? अभी वहां दो कांग्रेस कार्यकर्ता भी गिरफ्तार किये गये हैं ....

श्री कृष्ण चन्द्र पांडे (खलीलाबाद) : अध्यक्ष महोदय, जहां ये लोग हार जाते हैं, वहां इसी तरह से हल्ला करते हैं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : गृह मंत्री जी कब बयान देंगे ।

अध्यक्ष महोदय : जब वह आयेंगे, तब बतला दूंगा ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उन को कहिये कि वे जल्दी बयान दें । हम पंडित जी के भाषण में रुकावट नहीं डालना चाहते हैं, उन की गंगा-धारा बहेगी और हम उस में बहेंगे ।

12.13 hrs.

RAILWAY BUDGET, 1975-76—GENERAL DISCUSSION—contd.

रेल मंत्री (श्री कमलापति त्रिपाठी) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके प्रति अपना आभार प्रकट करता हूं, आप ने जो मुझे यह अवसर दिया कि रेल बजट पर तीन दिन तक जो बहस होती रही है, उसके संबंध में अपने विचार प्रकट करूं ।

मान्यवर, इस बजट पर माननीय सदस्यों ने बड़ी रुचि दिखलाई है, बड़ी दिलचस्पी दिखलाई है, इस लिये आप के द्वारा

---

*Published in Gazette of India Extraordinary, Part II, section 2, dated 10-3-75.

†Introduced with the recommendation of the President.

काम में उन के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूं। मुझे खेद है कि वाजपेयी जी कुछ नहीं बोले, लेकिन यह उन की उदारता और कृपा रही है, शायद इस कारण कि मुझे बहुत तकलीफ न हो।

अध्यक्ष महोदय : हां, उदार तो बहुत हैं।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (झलीपुर) : इस के लिये खेद नहीं है।

SHRI KAMLAPATI TRIPATHI: You were also very generous to me

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर) : ये ओवर-जैनरस है, इनसे बचकर रहियेगा।

श्री कमलापति त्रिपाठी : मान्यवर, इस बहस के लिये 10 घंटे का समय निर्धारित हुआ था, लेकिन 10 घन्टे का समय पार कर के करीब-करीब 14 घंटे यहां बहस हुई। कोशिश यही थी कि शुक्रवार को ही इस का उत्तर हो जाय, लेकिन समय नहीं मिला। यह इस बात का सबूत है कि हमारे माननीय सदस्यों को इस बजट पर बहुत दिलचस्पी रही है, खास तौर से रेल्वे के मामलों में। यह लक्षण बहुत अच्छा है, श्रीमन, लेकिन मैं यह निवेदन करना चाहता हूं—जैसा माननीय सदस्य जानते हैं कि मुझे कुल एक महीना अभी इस काम को अपने हाथ में लिये हुए हुआ है और माननीय सदस्यों में से ऐसे बहुत से लोग यहां हैं, जिन्होंने दसियों रेल्व बजट पर यहां भाषण किये होंगे और ऐसे भी बहुत लोग हैं जो कम से कम पिछले चार सालों में बराबर रेल बजट पर जब भी यहां आया है, वे उस पर बोले हैं।

अध्यक्ष महोदय : एक जैसा ही कहने आये हैं।

श्री कमलापति त्रिपाठी : ऐसी अवस्था में, श्रीमन, उन्हें जानकारी मुझ से अधिक है। इस बहस से मुझे एक बहुत बड़ा लाभ पहुंचा है—मैं महीनों तक लिखता-पढ़ता, चीजों को जानने की कोशिश करता, लेकिन इस सदन में हुई बहस से मेरा बड़ा ज्ञान-वर्धन हुआ है—रेलवे में किन किन सुधारों की जरूरत है, कर्मचारियों के सामने क्या क्या कठिनाइयां हैं, किन किन नुक्तों पर हमारे अन्दर दुर्बलता है—इन सब बातों पर अच्छा प्रकाश पड़ा है और सब से बढ़ कर प्रकाश इस बात पर पड़ा है कि किस किस क्षेत्र में लाइनें बनाने की आवश्यकता है, कहां कहां लाइनों में परिवर्तन करने की, उन को बढ़ाने की आवश्यकता है, विभिन्न क्षेत्रों के लिए यहां पर बराबर मांग होती रही है। यह मेरा बड़ा सौभाग्य है कि मैंने सारी बहस यहां बैठ कर सुनी और इसी विचार से यहां बैठा रहा कि इस से मेरी दृष्टि में कुछ ऐसी बातें आयेंगी और मेरा ज्ञान बढ़ेगा, जिनसे कि मैं कदाचित रेलवे के माध्यम से कुछ जनता की सेवा कर सकूंगा।

इस से पूर्व कि मैं इस सम्बन्ध में कुछ और बातें कहूं —मैं अपने भूतपूर्व रेल मंत्री स्वर्गीय श्री ललित नारायण मिश्र के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मैंने इधर उन के कार्य को देखा—मुझे, मान्यवर, ऐसा लगता है कि रेलवे विभाग का काम उन्होंने बड़े कठिन समय में उठाया था। रेलवे के सामने बहुत सी समस्यायें थीं रेलवे को घाटा लग रहा था—वर्षों पहले से, 1964-65 के बाद रेलवे को घाटा होना शुरू हुआ, उसकी आमदनी घटती चली गई, उस का खर्चा बढ़ता चला गया, चीजों की कीमतें बढ़ीं, वेतनमान बढ़े और तरह तरह के खर्चे उस पर पड़े, और यह महकमा जो विशेष रूप से समाज की सेवा के लिए है और जिस के पीछे यह नैतिक विचार भी है कि जहां इन को औद्योगिक और व्यवसायिक दृष्टि से चलाया जाय, वहां इस के पीछे एक सोशल-फिलासफी भी है कि यह जनता की सेवा भी कर सके, तो इस घाटे को सहते हुए भी यह अपने रास्ते पर चलती गई।

[[श्री कमलापति त्रिपाठी]

लेकिन यह ऐसी बात थी कि बहुत दिनों तक यह बोझा बर्दाश्त नहीं किया जा सकता था, क्योंकि रेलवे को जो घाटा होता है, वह जनता पर ही पड़ता है, कहीं बाहर से तो आता नहीं है—ऐसे समय में उन्होंने इस महकमे का काम अपने हाथ में लिया और हिम्मत के साथ उस को किया । उन के सामने बहुत सी कठिनाइयां थी, अनेकों समस्यायें थीं—किस तरह से आमदनी बढ़ाई जाय और आमदनी बढ़ाने का उन्होंने प्रयास किया—साहस के साथ प्रयास किया । आमदनी बढ़ी भी , लेकिन उतना घाटा पूरा नहीं हो सका, फिर भी उन का प्रयास चलता रहा ।

तमाम पिछड़े क्षेत्रों की तरफ भी उनका ध्यान गया, उन का यह दृष्टिकोण था—मैं भी उस नीति का समर्थक हूं, इस लिए यहां उस का उल्लेख कर रहा हूं—कि जहां बड़े बड़े नगर हैं, बड़े-बड़े शहर है, औद्योगिक और व्यावसायिक केन्द्र है, वहां तो व्यवसाय की दृष्टि से रेलवे विस्तार करती ही है, लेकिन जो ऐसे क्षेत्र है और व्यापक रूप से फैले हुए हैं जो पिछड़े हुए हैं, अनुन्नत क्षेत्र हैं, अविकसित क्षेत्र है, वहां किस प्रकार से हम रेलों की सुविधा प्रदान करें—इस की तरफ उन का ध्यान गया । उन्होंने ऐसी अनेकों योजनायें बनाई, बहुतों के लिए आश्वासन दिया, बहुत सी स्कीम्ज को सैंक्शन किया और मैं समझता हूं कि जनता और समाज की सेवा रेल के माध्यम से करते हुए ही उन का निधन भी हुआ । हम सभी जानते हैं रेलवे के माध्यम से ही समाज की सेवा करने के लिये वे वहां गये थे, समस्तीपुर लाइन का उद्घाटन करने के लिए गये थे ताकि अत्यन्त पिछड़े क्षेत्र में रेलों की सेवा का प्रारम्भ हो सके, परन्तु वहां उन के ऊपर वह आघात हुआ ।

मान्यवर उन के प्रति श्रद्धान्जली अर्पित करने मैं बजट के सम्बन्ध में कुछ आप की आज्ञा से आप के सम्मुख कुछ निवेदन करना चाहता हूं ।

श्री नरुल हुडा (कछार) : आज्ञा है ।

श्री कमलापति त्रिपाठी : मान्यवर, अभी माननीय सदस्य कछ नाबालिग हैं ।

मैं निवेदन कर रहा था कि बजट के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहता हूं । इस की दो तरह की टीकायें हुई । एक तो बहुत सी मिश्रित टीका हुई जहां इस बात की टीका हुई कि हमारे यहां की यह आवश्यकता है । बहुत को तो मैं जानता भी हूं कि आवश्यकतायें सही है बहुतों को यह भी जानता हूं कि इन की बड़ी भारी आवश्यकता है, जरुरत है । और बहुत जो नई बाते सामने रखी गई । और दूसरी टीका हुई हमारे बजट के सम्बन्ध में । मान्यवर मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि बजट कुछ ऐसी चीज है जो सरकार की नीतियों का एक दर्पण है, और मैं माननीय सदस्यों से यह निवेदन करना चाहता हूं कि बजट का भाषण होता है इसलिए कि यह संकेत किया जा सके, इशारा किया जा सके कि सरकार किस नीति का परिचालन करना चाहती है, किन नीतियों का संचालन करना चाहती है । बजट भाषण में उन्हीं नीतियों की ओर संकेत किया जाता है। हमारे इस बजट के भाषण में नीतियों की ओर संकेत किया गया । ऐसे ही कहा जाता है कि बजट का जो भाषण होता है यह नीतियों का दर्पण होता है । इसमें नीतियां दिखाई देती हैं। लेकिन बहुतों को मान्यवर, दर्पण में भी नहीं दिखाई देता है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : पंडित जी, यह अपना दोष भी हो सकता है और दर्पण का भी दोष हो सकता है ।

श्री कमलापति त्रिपाठी : मैं आप से निवेदन करता हूं कि वाजपेयी जी संस्कृति के समर्थक हैं । मान्यवर, एक श्लोक याद आ गया :

वस्तु प्रज्ञा स्वयं नास्ति, शास्त्रं तस्य करोति किम् लोचनाभ्याम् विहिनस्य, दर्पण किम् करिष्यति ।

ऐसा होता है कि दर्पण में दोष हो सकता है, देखने वाले में दोष हो, दिखाने वाले का दोष हो परन्तु ऐसे भी प्राणी हो सकते हैं जिन्हें न दिन में दिखाई दे न रात में दिखाई दे ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : या रात को ज्यादा दिखाई दे ।

श्री कमलापति त्रिपाठी : रात को दिखाई देने वाले ज्यादा हैं ।

अध्यक्ष महोदय : इनके सामने जो तीनों बैठे हैं इनके अकेलेपन में दोष है ।

श्री कमलापति त्रिपाठी : मान्यवर, कुछ थोड़ी सी बातों पर बजट भाषण में संकेत किया गया है । कोशिश इस बात पर की गई है कि जनता पर काम से कम भार पड़े । इस बात की भी कोशिश की गई, इस का संकेत है, कि जो प्रगति का काम है वह चलता रहे, कार्य चलता रहे, रुकने न पाये बावजूद पैसे की कमी के । कर्मचारियों के प्रति न्याय हो, इस दृष्टि से भी उस पर विचार किया गया और यात्रियों की सुविधा के लिये कुछ हो सके तो किया जाय । क्योंकि रेलों के मालिक तो यात्री हैं । मुझे रेलों के प्रशासन का ज्ञान नहीं है, लेकिन यात्रा करने का बड़ा ज्ञान है । 50 वर्ष हो गये यात्रा करते करते । एक छोटे से कार्यकर्त्ता के रूप में कन्याकुमारी से कश्मीर तक और द्वारिकापुरी से जगन्नाथपुरी और कामख्या तक बहुत यात्रा की और सारी श्रेणियों में यात्रा की । तीसरी श्रेणी में यात्रा किया करता था जब गांधी जी यात्रा किया करते थे और स्टेशनों पर रुकते थे तो हाथ बाहर कर दिया करते थे और कहते थे कि जो कुछ चन्दा देना हो हरिजनों के उद्धार के लिये, जनता दे दे । फिर इंटर, सेकेन्ड क्लास, फ़र्स्ट क्लास और मिनिस्टर होने के बाद ए०सी०सी० में भी यात्रा करने का अवसर मिला है और सब तरह की श्रेणियों की बुराई, कमजोरियां और अच्छाइयों से अच्छी तरह परिचित हूं । तो यात्रियों की सुविधा के लिये अगर कुछ किया जा सके तो अच्छा ही है । क्योंकि वह हमारे मालिक हैं, उन का स्वामित्व है । पिछड़े क्षेत्रों की ओर विशेष ध्यान दिया जाय इस की भी चर्चा की गई बजट भाषण में । अनुसूचित जाति तथा जनजातियों को प्रतिनिधित्व दे सकें, और जैसा अब तक रहा है वैसा रहे रेशियों चाहे भर्तों की हो, चाहे उन की उन्नति का हो उस पर ध्यान दे कर चलायी जाय । शिक्षित बेकारों की भी चर्चा उसमें की गई है । मण्डलीय और क्षेत्रीय परामर्श समितियों में शिक्षा संस्थाओं को प्रतिनिधित्व देने तथा उन के कालेजेज वगैरह में छुट्टियां शुरु होने से पहले रिजर्वेशन वगैरह का इंतजाम करें, इस की भी चर्चा की गई तो आप देखें मुख्य-मुख्य बातें, छै, सात बातें हैं जिनके सम्बन्ध में बजट भाषण में चर्चा की गई है । जिन नीतियों को संचालित और कार्यान्वित करना चाहते हैं आप के सहयोग से । यह मेरी चेष्टा रहेगी और भगवान कृपा करे तो थोड़ी बहुत सफलता हो । इन सब बातों की तरफ़ बजट में ध्यान दिया गया है ।

मान्यवर, बजट का स्वागत भी हुआ साधारण तौर पर, भीतर भी और बाहर भी । लेकिन यह भी जानता हूं कि जहां उस का स्वागत हुआ है, वहां उसकी कोई माने में टीका भी हुई है । कुछ मुख्य प्रश्न उठाये गये हैं । तो इस के पूर्व कि मैं और सब बातों पर टिप्पणी करूं, हमारे माननीय मित्र श्री समर

[श्री कमलापति त्रिपाठी]

मुखर्जी इस वक्त नहीं हैं, उन्होंने इस बहस का शुभारम्भ किया । उन्हें भी दर्पण में कुछ दिखाई नहीं दिया, यह मेरा कुछ दुर्भाग्य रहा है । लेकिन उन्होंने एक अजीब किस्म की बात कही । सब से बड़ी टीका उन की यह रही है कि यह बजट अनरियेलिस्टिक है । यह तो बजट का भाषण है, उस के साथ मागे पेश होंगी, सब सामने मौजूद है । यह तो कह सकते थे कि इसमें फलां-फलां जगह गलती हुई है, या इतनी माग नहीं होनी चाहिए, या इतना पैसा कम रहा है । उन्होंने एक दम से इस बजट को अनरियेलिस्टिक कह दिया । मतलब यह कि अवास्तविक है । वस्तुस्थिति से बहुत परे है । अब यह जो बाते हम ने कही हैं इन को करने की हम चेष्टा करेंगे । इन मे अवास्तविकता कहां है ? जो रेलवे का भार सचालित करने के लिये नियुक्त किया जाय, आप के माध्यम से और माननीय सदन की कृपा से उसे इन बातों को पूरा करना चाहिए । प्रमुख चीजें हैं, बहुत डिटेल की बातें नहीं हैं । इस में अवास्तविकता का कहीं पता नही है । अवास्तविकता जो उन्होंने कही वह इस दृष्टि से कही है कि जो उम्मीद है सुरंग से अब बाहर होना है और अगला साल हमारे लिये कुछ अच्छा होगा उस में अधिक स्थिरता से काम कर सकेंगे और आप ने जो यह उम्मीद प्रकट की है कि आप की आमदनी कुछ बढ़ेगी, यह सब अनरियेलिस्टक है । एक अनास्था, एक निराशा की भावना का उद्दीपन और अभिव्यक्ति करने की उन्होंने चेष्टा की है । मान्यवर दुनिया मे कोई भी आदमी कैसे काम कर सकता है जब तक कि कोई आशा और विश्वास न हो ? मुमकिन है यह आशायें पूरी हो जायें । हमारा प्रयास और आप लोगों का अनुग्रह और आप का सहयोग हमारा सहायक हो । मुमकिन है कि हमारा प्रयास सफल हो जाय । यह भी मुमकिन है कि उस में कुछ कमी रह जाय । परन्तु जब तक एक विश्वास और आस्था के साथ हम अग्रसर न हों और निष्ठा के साथ, संकल्प के साथ कि यह काम हम को करना है तब तक दुनिया मे किसी ने कोई काम नहीं किया और न कोई काम पूरा हो सकता है । और मैं आप से निवेदन करूं नम्रता के साथ, हमारे बहुत से साथी बैठे हुए हैं जानते हैं, विरोधी दल के भी हमारे साथी हैं वह भी जानते हैं कि मैं सौभाग्य से सार्वजनिक कार्यकर्ताओं की उस पीढ़ी से सम्बन्ध रखता हूं जो पीढ़ी आगे बढ़ी थी खाली विश्वास, आशा, आस्था और संकल्प के बल पर । उस पीढ़ी से मेरा सौभाग्य है कि मैं सम्बद्ध हू । वह एक विश्वास और आस्था न होती तो गांधी जी के चर्खे से स्वराज्य हो जायगा यह मान कर के कोई उन के पीछे नहीं चलता । एक विश्वास ही वह चीज थी । और उस समय भी ऐसी अनास्था और निराशा वाले व्यक्ति थे । मान्यवर, हम जानते हैं कि जिन्हे वह नही दिखाई देता था कि इस से भी कुछ हो सकता है वह विरोध ही कर के कुछ न कुछ मजाक उड़ाते थे कि चर्खे से, खादी पहनने से, और हरिजनों का उद्धार करने से, राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रचार करने से कहीं हमारा स्वराज्य होने वाला है । एक विश्वास और एक संकल्प था और सतत प्रयास होता, तो निराश

हुआ होता लेकिन फिर मुझे याद आ गया। मैं सुनाऊं आपको :

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मन. ।।

यह भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है गीता में। अब श्रद्धा न हो किसी काम को करने में, तो यह क्या ठीक बात है। उन्होंने कह दिया कि एक सुरंग से निकले तो दूसरी सुरंग में चले गये। मान्यवर, मैं मान सकता हूं कि कठिनाइयां कोई दूर नहीं हो गई है। एक कठिनाई का परिहार हो सके, एक कठिनाई का अन्त हो सके, इसका प्रयास किया जा रहा है। अब दूसरी कठिनाई सामने उत्पन्न हुई, तो उस को भी दूर किया जाएगा। जीवन की यात्रा ही कठिनाइयों में होती है। एक समस्या सुलझ जाती है, तो दूसरी समस्या सामने खड़ी हो जाती है। हमारा सारे जीवन का यह अनुभव है और सार्वजनिक जीवन का भी यह अनुभव है कि कभी भी आप ऐसी स्थिति पर नहीं पहुंचते जब आप यह समझते है कि हमारी सारी समस्याएं सुलझ गई हैं। कहिये, मिश्रा जी बात ठीक है।...(व्यवधान), एक समस्या सुलझ गई, तो दूसरी खड़ी हो जाती है, लेकिन मैं विश्वास के साथ उन कामों को करने की चेष्टा कर रहा हूं और पूरा करने की कोशिश कर रहा हूं। मेरा ऐसा प्रयास है और आप लोगों की उदारता से हम इसमें सफल हैं, यह हमारी बहुत इच्छा है।

अब कुछ प्रमुख समस्याओं के सम्बन्ध में कहना चाहता हूं। एक बात बार-बार यह कही गई कि स्वर्गीय ललित नारायण मिश्र द्वारा दिये गये आश्वासनों को पूरा किया जाए। मैं उनको अपनी श्रद्धांजलि भी अर्पित कर दूं और यह कहता हूं कि स्व० ललित नारायण मिश्र ने जो आश्वासन दिये थे, उनको पूरा करने की चेष्टा की जाएगी।...(व्यवधान) ...श्रीमन् मैं यह कह रहा था कि उन आश्वासनों को पूरा करने का आग्रह हमारे विभाग में है और मैं विश्वास दिलाना चाहता हूं कि उन्होंने जो आश्वासन दिये थे, उनको पूरा करने की चेष्टा करूंगा ही, जिन चीजों को उन्होंने सैंक्शन किया था, उन्हें भी पूरा करने की चेष्टा करूंगा, जिन चीजों का उन्होंने सर्वे कराया था और इस इरादे से कि उसकी रिपोर्ट आ जाए, तो उस के ऊपर कोई कार्यवाही की जाए, तो उसे भी पूरा करने की चेष्टा करूंगा और इसके अलावा जो बातें माननीय सदस्यों ने कही हैं और उन बातों के अलावा जो बहुत से प्रश्न उठे हैं, उन को हमने नोट कर लिया है और उनके सम्बन्ध में यद्यपि आज यहां उत्तर देना तो सम्भव नहीं है लेकिन प्रत्येक के पास चिट्ठी में उसका जवाब दे दूंगा कि आपकी इस योजना के सम्बन्ध में हम यह करने वाले है और उन्हें भी कार्यान्वित करने की चेष्टा करूंगा।

श्री नवल किशोर सिंह (मुजफ्फरपुर) : समस्तीपुर और बारावेकी में जो कन्वर्जन हो रहा है वह भी समय के अन्दर हो जाएगा।

श्री कमलापति त्रिपाठी मैं जो कहूं उसे सुनते चले जाइए। उसमें उनका प्राण गया, उस काम को तो करना ही है, लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा है "संशयात्मा विनश्यति", इधर के लोगों में संशय न उत्पन्न हो। तो मैं निवेदन कर रहा था कि वह काम हम पूरा करेंगे, पर एक बात की ओर मैं माननीय सदस्यों का ध्यान दिलाना चाहता हूं और वह मैं किसी से छिपाता नहीं हूं और वह यह है कि इसकी पूरी जानकारी है आदरणीय सदन के माननीय सदस्यों को, कि देश के ऊपर बड़ा भारी आर्थिक संकट है। एक योजना आयोग है और एक वित्त मन्त्रालय भी है और हमारी मांगे भी हैं लेकिन हमारे लिए यह आवश्यक होता है कि हम योजना आयोग के सम्मुख जाएं और उनके लिए आवश्यक होता है कि वे वित्त मन्त्रालय से पूछ-ताछ कर के जो पैसे की स्वीकृति होती है, वह करें। हमने हिसाब लगाया है इन थोड़े दिनों में कि जितने भी आश्वासन दिये है और जितनी स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है, उनको यदि हम पूरा करें, तो हमें तीन सौ या पौने चार सौ करोड़

[श्री कमलापति त्रिपाठी]

रुपये चाहिएं लेकिन हमें मिले हैं, मान्यवर, सौ करोड़ रुपया। अगर सौ करोड़ उस में से निकालें तो ढाई सौ करोड़ रुपया और विशेष चाहिए। हम ऐसा प्रयास कर रहे हैं कि हमें यह रुपया दिया जाए और हम लिखा-पढ़ी भी कर रहे हैं। इस चेष्टा में हमारा विभाग संलग्न है। योजना आयोग से बातचीत भी करेंगे। वित्त मंत्रालय के श्री प्रणव कुमार मुकर्जी चले गये है. श्री सुब्रह्मण्यम यहां बैठे हुये हैं, उनसे भी मैं चेष्टा करूंगा कि कुछ और रुपया मिले।

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI C. SUBRAMANIAM): I am always by your side.

SHRI KAMLAPATI TRIPATHI: You are not only on my side but at my disposal also.

तो मैं इस बात की चेष्टा करूंगा और मुझे उम्मीद है कि कुछ और मिलेगा। एक साथ सब काम भले ही शुरु न हो जाएं और अगर देर लगे, तो माननीय सदस्य यह न समझें कि ये काम करना नही चाहते। जैसे-जैसे पैसा मिलता चलेगा और जैसे-जैसे सहायता आती रहेगी, वैसे वैसे इस काम को बढ़ाते रहेंगे। हमारी चेष्टा यह होगी कि पंचवर्षीय योजना में जो अभी चल रही है उसमें जितनी बातें कह चुके हैं, उनके लिए कुछ हम करें। अब यह बात ठीक है कि कुछ योजनाएं हैं जिन का शिलान्यास श्री मिश्र ने किया था और हमारे पराशर जी ने बड़े जोरों से कहा और खुद कहा ही नही बल्कि बहुतों से कहलवाया भी कि उस को पूरा होना चाहिए। अब नागल तलवाड़ी की बात है। आज हमारे गेंदा सिंह जी दिखाई नही दे रहे हैं, उन्हें शारीरिक कठिनाई है चलने फिरने की और वे इस के बारे में बड़े उत्सुक हैं और अपनी बूढ़ावस्था में यहां पर उन्होंने बैठे ही बात की कि नारायणी, छतौनी और गंडक के ऊपर पुल बनना चाहिए जिस का शिलान्यास प्राइम मिनिस्टर ने किया है। उसके सम्बन्ध में उन्होंने आग्रह किया। मकेर जी आकर मुझ से कहा और चिट्ठी भी लिखी। मैं जानता हूं कि इन को उत्सुकता है और यह सवाल हमारे सामने है। कोशिश, हम चेष्टा करेंगे कि इन चीजों को हम जल्द से जल्द पूरा करें।

श्री रामचन्द्र विकल (बागपत) शहादरा-सहारनपुर रेलवे का भी कुछ करिये।

श्री कमलापति त्रिपाठी : आप को भी चिट्ठी लिख दूंगा। जैसे जैसे हम को पैसा मिलता चलेगा, वैसे वैसे हम काम करते चले जाएंगे।

बहुत से माननीय सदस्यों को मैं फिर विश्वास दिलाना चाहता हूं कि उन्होंने अपने अपने क्षेत्रों की बात कही और सब बातें हमारे यहां नोट कर ली गई हैं और मैंने विभाग से कह दिया है कि एक एक बात का उत्तर दीजिए अपने यहां के कागजों को देख कर कि हम क्या करने वाले हैं। जिन बातों का आपने ध्यान दिलाया है वे ऐसी बातें हैं जोकि बहुत आवश्यक हैं और मैं समझता हूं कि गैर आवश्यक बात किसी ने नहीं उठाई होगी। यथा-सम्भव मैं इन को पूरा करने की चेष्टा करूंगा।

अब मान्यवर, एक बात बहुत कही गई कि हम ने जो भाड़ा नहीं बढ़ाया है, तो इस से यह इलैक्शन का बजट हो गया... (व्यवधान)...ठीक है, चित भी मेरी और पट भी मेरी। अब यह इलैक्शन का बजट हो गया। इलैक्शन का बजट अगर होता तो आप के सामने श्री सुब्रह्मण्यम बैठे हुये हैं, इन का बजट देख लीजिए। अगर इलैक्शन का बजट होता, तो इन का भी बजट आप देखें। ....(व्यवधान)... ऐसा मालूम पड़ता है कि इलैक्शन का भूत जो है, वह हमारे माननीय वाजपेयी जी और हमारे

माननीय गुप्त जी के मस्तिष्क पर ऐसा चढ़ा हुआ है कि वे परेशान हो गये। इलेक्शन आयगा। आए बिना नहीं रहेगा। दो महीने में नहीं आता है तो आठ महीने, दस महीने बाद आएगा। तब सब लोगों की पतरेबाजी देखी जायगी। पूरी पूरी कोशिश होगी सबकी कि वे जीतें। कौन जीतता है और कौन हारता है सबके सामने आ जाएगा। भीषण संघर्ष होगा। लेकिन आप यह क्यों कहते हैं कि इलेक्शन का बजट है? इलेक्शन का बजट नहीं है। मैं मानता हूं कि जनता का लाभ करने की दृष्टि से इसको बनाया गया है। हमने किराए नहीं बढ़ाए हैं। जो कुछ किया जा रहा है जनता के हित में किया जा रहा है। उसका हित होगा। इलेक्शन जब होंगे तब जो नतीजे आएंगे उनको भी देख लेंगे। लेकिन जब तक यहां बैठे हैं तब तक जो कुछ भी जनता के हित के लिए समक्ष में आयेगा और अन्तर्आत्मा कहेगी उसको करने की चेष्टा हम करेंगे और करनी चाहिए। फिर चाहे उसके कुछ भी नतीजे हों।

एक बात जरूर है। हमारे विरोधी भाइयों को बड़े बड़े विषाक्त बाण सधान करके चलाने की आवश्यकता नहीं पड़ी और इस बात की बहुत बड़ी शिकायत रह गई है। मुझे ऐसा लगा कि यात्रियों पर रेल भाड़ा इतना बढ़ चुका है कि घाटा होते हुए भी कोई दूसरा मार्ग घाटा पूरा करने का हम को सोचना चाहिये और उस रास्ते से घाटे का मुकाबला करना चाहिये। फिर इस में भी इजाफा न किया जाए अगर हो सके। मैं यह कहने के लिए तैयार हूं—विभाग इसको पसन्द—करेगा या नहीं, मंत्रालय भी पसन्द करेगा या नहीं करेगा, मैं नहीं कह सकता हूं—यदि मुम्किन हो तो इन भाड़ों में कुछ कमी करने की जरूरत है—

श्री इन्द्रजीत गुप्त : इलैक्शन बजट अगर होता तो जरूर आप घटा देते। आपने नहीं घटाया, इसका मतलब यह है कि इलैक्शन बजट यह नहीं है। इस बास्ते में आपको स्पोर्ट करता हूं।

श्री कमलापति त्रिपाठी : लेकिन समर मुखर्जी जी ने, कछवाय जी ने कहा है कि इलैक्शन बजट है। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि जनता के हित को दृष्टि में रखते हुए किरायों को बढ़ाने की गुंजाइश दिखाई नहीं पड़ी। बजट प्रलेखों से मालूम होता है कि 1974–75 में भारतीय रेलों पर सामाजिक दायित्वों का अनुमानित वित्तीय प्रभाव लगभग 203 करोड़ रुपये है जिसमें से लगभग 153 करोड़ रुपये की रकम उपनगरीय और अनुपनगरीय यात्री यातायात, पार्सल सामान आदि जैसी कोचिंग सर्विस पर होने वाली हानि की है। शेष लगभग 50.05 करोड़ की रकम में से अनाज की ढुलाई पर होने वाली हानि लगभग 34.50 करोड़ रुपये है। लगभग 3 5 करोड़ का घाटा निर्यात वाले आयरन और और मैंगनीज ओर के भाड़े पर दी जाने वाली रियायत पर है। सहायता कार्य के लिये अपेक्षित वस्तुओं चारा, फल, सब्जियां, लकड़ी, लकड़ी का कोयला नमक, गुड़ शक्कर औरजागरीआदिके परिवहनपरहोने वाली रकम करीब बारह करोड़ है। सोचा यह है कि इसको कुछ पूरा करने की आवश्यकता है। गल्ले का फ्रट रेट बढ़ाया नहीं गया है। कुछ माननीय सदस्यों ने कहा है कि बढ़ा दिया है। लेकिन कुछ बढ़ाया नहीं गया है। जो स्टैंडर्ड ट्रैफिक रेट्स हैं और लोएस्ट केटगरी के रेट हैं। जो लेने चाहिये उससे भी कम रेट पर हम गल्ला ढोते रहे हैं। जितना देश में गल्ला पैदा होता है उसका सौलह परसेंट से ज्यादा रेलें नहीं ढोती हैं। अगर सो लाख टन अनाज पैदा हुआ तो सोलह लाख टन गेहूं रेलों से ढोया जाता है। बाकी

(श्री कमलापति त्रिपाठी)

84 लाख टन अनाज ले जाने वाले जैसे ले जाना चाहते हैं ले जाते हैं । सोलह परसेंट हम कैरी करते हैं । इस में पचास परसेंट प्राइवेट सैक्टर का होता है और बाकी पचास परसेंट एफ सी आई का वगैरह का होता है । गल्ले पर सब्सिडी के रूप में हमको अब तक 34.50 करोड़ का घाटा होता रहा है । जो हमारा स्टैंडर्ड ट्रैफिक रेट है, जितना हमें लेना चाहिये और लेते हैं इससे कम में हम उसको ढोते हैं । बस उतनी हमने कमी की है । अब वह रेट होगा जो लोएस्ट कैटगरी का रहा है, जिस पर गल्ला ढोया जाना चाहिये, जो स्टैंडर्ड रेट लेते हैं उतना और उससे हमारा घाटा पूरा हो जाता है । हमने बढ़ाया नही है ।

मैं जरूर साफ साफ कह देना चाहता हूं कि तब भी कीमत बढ़ेगी दो या ढाई पैसे पर किलो । हमारे ममर मुखर्जी साहब ने कहा कि यह बड़ा अनरीमनिस्टिक है । कुछ और माननीय सदस्यो ने भी ऐसी बात कही है । अगर सौ मिलियन टन गल्ला पैदा हुआ और सोलह मिलियन टन रेलो न ढोया तो पिछले पांच वर्षों में खाद्यानो के थोक मूल्यो का सूचकांक 1969–70 ; 208.2 से बढकर अक्तूबर, 1974 में 4.32 हो गया है अर्थात उसमे दूने से भी अधिक वृद्धि हुई है जब कि इस अवधि मे रेलो ने खाद्यान्नों की दर सूची म कोई संशोधन नही किया और सहायता के रूप में अपनी परिचालन लागत से भी कम पर खाद्यान्नो को ढोना जारी रखा है ।

इस वास्ते स्टेडर्ड रेट रखने से कोई फर्क नही पड़ता । बहुत स्माल पार्ट इसका हम ढोयेंगे और कोई बड़ा भारी असर नही पड़ने वाला है । मैं आशा करता हूं कि वह तो गेहूं का उत्पादन बढ़ने वाला है और ओले आदि अगर न पड़ जाएं या कोई ऐसी बात आदि न हो जाए तो जो रबी की फसल होने वाली है उससे चीजों के दाम कुछ नीचे जाने वाले हैं और यह लाजीमी है । नीचे ग ए बिना रह नहीं सकते हैं । इस वास्ते ढाई पैसे पर किलो जो बढ़ता है वह उस में बहुत अच्छी तरह से जमा जाएगा किसी पर कोई बोझा नही पड़ेगा ।

जहां तक आयरन ओर का सम्बन्ध है उसकी कीमते बाहर भी और यहां भी बढ़ी है और यह सोचा गया है कि उसको टैफिक रेट से नीचे क्यों रखें । उसको बढ़ा दिया है । इस तरह खाद्यान्नों और आयरन ओर और मैंगनीज ओर की स्टेन्डर्ड ट्रैफिक रेट मे लाकर करोड़ 38 करोड़ का घाटा हमने पूरा कर लिया । इस वजह से हमें घाटे का बजट किसी प्रकार पूरा होता दिखाई दिया है । बाकी जो घाटा है उसको देखते हुए हमन अपना बजट इस उम्मीद से निर्धारित किया है कि हमारी आमदनी इस बार बढने वाली है । इस वक्त सत्तर लाख आदमी रोज रेल में यात्रा करते हैं । यात्रियो की सख्या भी बढ़नी चाहिए और माल भी मैं समझता हूं कि ज्यादा ढोया जाएगा क्योंकि गाडियो की सख्या भी हमने बढा दी है । कोयले का उत्पादन बढ रहा है और बहुत तेजी से बढ रहा है । हमें कोयला नही मिलता था जिस की वजह से हमारी ट्रेने बन्द हो गई थी । जो गाड़ियो बन्द हैं उनको भी हम चला सके जैसे वादा किया है । बार बार माग होती रही है कि जिन गाड़ियों को बद किया है उनको चालू किया जाए । जैसे जैसे कोयला मिलता जा रहा ह हम चालू करते जा रहे हैं । आज ही 22 गाड़ियां चालू कर दी है और बाकी जो है उनको भी हम चला देगे । हम समझते हैं कि दो महीने में अधिकतर गाड़ियां जो कोयले के अभाव से रुकी रही हैं चालू हो जाएगी । कोयला हम को मिलने लगा है । उस का भंडार भी बन रहा है । उस से भी हमारी आमदनी बढेगी ।

श्री मुकर्जी को निराशा है । उन्होंने कहा कि इतना प्राडाक्शन कभी नहीं होगा, तुम गलत उम्मीद लगाये बैठे हो । अगर हम में देश के भविष्य के बारे में विश्वास न हो, और हम यही समझ कर बैठे रहें कि सारा देश अधकार में पड़ा हुआ है, उसका कोई भविष्य

नहीं है, आने वाले समय में कोई उज्ज्वलता नहीं है, हम सब को नरक में जाना है अगर, हम यही सोचते रहें और हर वक्त तदनुसार कहते रहें, तो फिर देश का और कुछ नहीं होगा।

एक कथा याद आ गई है। अगर श्री वाजपेयी की आज्ञा हो, तो बता दूं। महाभारत में एक स्थल पर आता है कि कर्ण और अर्जुन का युद्ध होने वाला है, और कर्ण ने अपना रथ हांकने के लिए शल्य को बिठाया, ताकि वह रथ हांकने में कृष्ण का मुकाबला कर सके। शल्य को पांडवों से सहानुभूति थी, वह उनके मामा थे। उन्होंने युधिष्ठिर को आशीर्वाद दिया कि हम कर्ण का तेज-वध, तेज-हनन, करेंगे ताकि वह अर्जुन का मुकबला न कर सके। और उन्होंने कर्ण का तेज-वध किया। शल्य बड़े बहादुर और महान सेनापति थे। वह मद्रदेश के राजा थे वह रास्ते भर कर्ण को कहते रहे कि तुम क्या लड़ोगे अर्जुन से, तुम्हारा बाण क्या चलेगा, तुम बुरी तरह से मारे जाओगे। वह रास्ते भर यह प्रापेगेंडा करते गये। इस तरह उन्होंने कर्ण का तेज-हनन कर दिया और बेचारा कर्ण मारा गया

हमारे ये मित्र भी तेज-हनन कर रहे हैं; वे हमेशा कहते रहते हैं कि देश में कुछ नहीं हो रहा है, चारों तरफ भ्रष्टाचार है, जो लोग शासन में हैं, वे स्वार्थी हैं, वे सब कुछ खा जा रहे हैं, उन्हें देश के प्रति कोई प्रेम, आस्था और विश्वास नहीं है। ये लोग निराशा का वातावरण पैदा करते रहे, अंधकार के युग की बात करते रहे, यही रोना रोते रहे कि प्राडक्शन नहीं बढ़ने वाला है न आमदनी बढ़ने वाली है, तुम्हारा दिवाला पिटने वाला है, आदि (व्यवधान) हम समझते हैं कि उन्हे तेज-वध की प्रक्रिया को नही अपनाना चाहिए। वे देश में आत्म-विश्वास और आशा का वातावरण पैदा करने का कुछ तो प्रयत्न करें। वे ऐसी बातें न करते रहे, जिस से देश में यह आत्म विश्वास न रहे कि हम इन कठिनाइयों को पार कर सकते हैं और उन से लड़ सकते हैं।

हमें आशा है कि हमारा प्राडक्शन बढ़ेगा। हमें आशा है कि खेती का प्राडक्शन भी बढ़ने वाला है और खान का प्राडक्शन भी बढ़ने वाला है, और उस का संचालन भी बढ़ने वाला है। उस के अधिक परिचालन की आवश्यकता पड़ेगी। हम तो यहां तक समझ रहे हैं कि हमारे पास जिस तरह की गाड़ियां हैं, वे उतना भार नहीं ढो सकेंगी। विशेषकर कोयला और लौह अयस्क की ढुलाई के लिये 4500 मैट्रिक टन से 7200 मेट्रिक टन और कही कही 9000 मेट्रिक टन भार ढोने के लिए अलग से गाड़िया चलानी पड़ेगी ऐसी आवश्यकता प्रतीत हो रही है। इस के लिए कोशिश हो रही है कि वर्कशाप्स मे ऐसी नई चीजे बनाई जायें। हमारा विश्वास है कि हमारी श्रमदानी बढ़ेगी, और जो घाटा हो रहा है, वह पूरा होगा। भोज्य पदार्थों के फ्रट का जो रेट बढ़ाया गया है, जो होना चाहिए, उस से भोजन के दामों पर कोई बहुत बडा प्रभाव नही पड़ने वाला है। हम बहुत आसानी से उस को चला सकेंगे। चूंकि भाजन वाले मामले पर बहुत जोर दिया गया है, इस लिए मैं ने यह निवदन कर दिया है।

रेलव मे काम करने वाले हमारे जो श्रमिक भाई हैं, उन का प्रश्न भी उठाया गया है। जैसा कि मैं ने अपने बजट भाषण मे कहा है, हमारी यह नीति होगी कि रेल में काम करने वाले श्रमिक भाइयो और प्रबन्धकों में अब सहज साधारण सम्बन्ध स्थापित हो जाना चाहिए। यह दुर्भाग्य की बात थी कि 1974 मे जो हड़ताल हुई, उस से कटुता और तीव्रता फैली। यह आवश्यक है कि अब हम उस के परिहार की चेष्टा करें, ताकि जहां तक सम्भव हो सके, वह सहज स्थिति पैदा हो जाये, जो कि होनी चाहिए।

इस के लिए श्रमिक भाइयों के मन में विश्वास उत्पन्न करने की आवश्यकता है। मैंने अपने बजट भाषण में यह संकेत किया है कि

[श्री कमलापति त्रिपाठी]

हमारा मैनेजमेंट इतना एनलाइटन्ड हो, उस की नीति यह हो कि श्रमिकों के कल्याण के लिए यथा संभव प्रयास किया जायें ताकि आपस में बातचीत हो सके, वे लोग बड़े से बड़े वरिष्ठ अधिकारियों से बात कर सकें और किसी किस्म का दुराव न रह जाये। इस दिशा मे कई कदम उठाये गये हैं।

मैं ने अपने बजट भाषण में निवेदन किया है कि कुछ लोगों का जो ब्रेक इन सर्विस हुआ था, उस को हम कनडोन करते हैं, अगर वे यार्लेस, सैबोटेज या इनटिमिडेशन की श्रेणी में नही हैं।

श्री एस० एम० बनर्जी: (कानपुर) : इनटिमिडेशन का निकाल दीजिए।

श्री कमलापति त्रिपाठी : मैं इस बारे मे सोच रहा हूं। इनटिमिडेशन भी हुआ है। मैं खुद जनता हूं कि मुगलसराय में, जहां, इतना बड़ा यार्ड है, इतनी बड़ी कालोनी है, लोग डंडा ले कर काम करने वालो के घर के दरवाजे पर बैठे कि अगर तुम काम करने के लिए जाओगे, तो तुम्हारे खानदान वालों को पीट देंगे। लखनऊ में भी ऐसा हुआ है। मेरे सामने ऐसे केसिज आये हैं। (व्यवधान)

यह देखने की भी जरूरत है कि इनटिमिडेशन के नाम पर कोई हव्वाह-म-ख्वाह न फंसाया जाये। लेकिन इस बात को भी देखने की आवश्यकता है कि अगर सचमुच में इनटिमिडेशन हुआ है, तो उस तरह की चीज को बर्दाश्त न किया जाये, वर्ना हम कैसे काम कर सकेंगे। जो आंकड़े मेरे पास हैं, उन के अनुसार लगभग 16,800 आदमी बर्खास्त किये गये थे और उनमें से लगभग 14800 आदमी काम पर ले लिये गये हैं।

श्री एस० एम० बनर्जी : 2900 बाकी हैं।

श्री कमलापति त्रिपाठी: : लगभग 2000 उन के लिए भी आदेश जा चुके हैं कि उन के केसिज पर—बायलेंस, सैबोटेज और इनटिमिडेशन की कैटेगरी के लोगों को छोड़ कर; उन के लिए अभी हम कुछ नहीं कर सकते हैं; वे सजा पायें —सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जाये। (व्यवधान)

श्री एस० एम० मुकर्जी : कचहरी में जिन के मुकदमे हैं, अगर उस के खिलाफ चार्ज साबित नहीं हो सका है, तो उन को ले लेना चाहिए।

श्री कमलापति त्रिपाठी : मैं आश्वासन देता हूं कि अगर ऐसे केसिज मेरे सामने लाये जायेंगे, तो मैं बहुत सहानुभूति के साथ उन को देखूंगा।

SHRIMATI PARVATHI KRISHNAN (Coimbatore): I want a clarification now or at the end of it.

SHRI KAMLAPATI TRIPATHI: I always carry out your order, Sister; Why are you disturbing?

SHRIMATI PARVATHI KRISHNAN: I just want to have a clarification now or at the end.

SHRI KAMLAPATI TRIPATHI: You have seen me in connection with the Dock and Ports labour strike. You know how much I helped you and now also I am helping. You know me very well. Why do you disturb me?

मैं कह रहा था कि ऐसे लोगों को छोड़ कर बाकी के केसिज पर सहानुभूति के साथ विचार किया जायेगा, और किया गया है। लगभग 14,800 ले लिये गये हैं और लगभग 2000 बाकी हैं। 1300 मुकदमे अदालत में चल रहे थे। जिन में 800 से ऊपर कैसेज में विदड्रा करने की सिफारिश स्टेट गवर्नमेंट्स से हो चुकी है, अब कुल 500 के लगभग बाकी है जिन को देखा जा रहा है और सब से यह कहा गया है कि जिस तरह से 800 कैसेज विदड्रा हो रहे हैं, उसी

तरह से जितने और केसेज हैं, जो सैबोटाज आदि से भिन्न हैं, उन को विदड्रा करने के लिये भी स्टेट गवर्नमेंट्स से कह दिया जाय। प्रदेश की सरकारें हमारे साथ सहयोग कर रही हैं ....

13.00 hrs.

SHRIMATI PARVATHI KRISHNAN: In my own case, the charge-sheet has not been filed so far. I am on bail. Along with me there are other 18 workers.

SHRI KAMLAPATI TRIPATHI: You are at liberty to come to my place and give me your note.

SHRIMATI PARVATHI KRISHNAN: My point is that your officers are feeding you with wrong information.

SHRI KAMLAPATI TRIPATHI: You depend on me; not on the officers.

श्री इन्द्रजीत गुप्त : यह जो आप कहते हैं कि 800 केसेज या जितने भी केसेज हैं उन को विदड्रा करने की सिफारिश स्टेट गवर्नमेन्ट्स से की गई है—लेकिन हमारी जानकारी है ....

श्री कमलापति त्रिपाठी : हम ने स्टेट गवर्नमेन्ट्स को कहा है।

श्री इन्द्रजीत गुप्त : ठीक है आप ने कहा है—लेकिन आप के जो लोकल रेलवे अधिकारी हैं, वे बाधा डाल रहे हैं क्योंकि वे मैनेजमेन्ट हैं, इस लिये वे कहते हैं कि हम विदड्रा नहीं करेंगे।

श्री कमलापति त्रिपाठी : यह हो सकता है, मैं इस को देख लूंगा। अगर कोई ऐसे एक-दो केसेज आप को मालूम हों तो मुझे बतला दीजिये, मैं देख लूंगा।

माननीय, कैजुअल लेबर की बात कही गई है—तीन लाख लोग काम करते हैं, उन में से 21 हजार निकाले गये थे, 12 हजार ले लिये गये, 8–9 हजार जो बाकी हैं उन को भी यथासम्भव ले लेंगे, जैसे जैसे काम निकलता जायेगा, इन को लेते जायेंगे, एक-दो महीने में सब ले लिये जायेंगे। उन की ब्रेक इन सर्विस को कन्डोन किया है....

श्री विनेश भट्टाचार्य (सीरमपुर) : कन्डोन किया है, लेकिन उन को डेली-वेजेज में लिया है।

श्री कमलापति त्रिपाठी : मैं इस में यही निवेदन करना चाहता हूं कि मेरा इस में दुराग्रह नहीं है। इन आदेशों के कार्यान्वियन में कहीं कोई दिक्कत पैदा की जा रही हो या कार्यान्वियन न हो रहा हो, अड़चन पैदा किया जा रहा हो—हो सकता है ऐसा हो रहा हो। एक-दो माननीय सदस्यों ने ऐसा कहा है—मैं उन को गलत नहीं कहता हूं, आप उस की तरफ हमारा ध्यान करा दीजिये, हम उस में देखने की चेष्टा करेंगे कि ऐसा क्यों हो रहा है—इस समय यह मैं आप से कह सकता हूं।

मैं इस समय इतना ही स्पष्ट करना चाहता हूं कि जिन लोगों ने गलत काम किया है, हिंसा, तोड़-फोड़ या डराने-धमकाने की कार्यवाही की है—वे केसेज अलग हैं, बाकी जितने केसेज हैं उन के ऊपर सहानुभूति के साथ देखेंगे और ठीक करने की कोशिश करेंगे। कैजुअल लेबर के बारे में जैसे कहा गया है कि 90 फीसदी बाकी हैं—ऐसी बात नहीं है, कुल 21 हजार थे, जिन में से 12 हजार को ले लिया गया है, 8–9 हजार बाकी हैं, उन को हम यथासम्भव खपा देने की कोशिश करेंगे, बड़ा भारी महकमा है,....

श्री इन्द्रजीत गुप्त : कैजुअल हम लोग नहीं कहते हैं, आप कहते हैं। 10–15 साल से जो काम कर रहे हैं उन को आप कैजुअल कहते हैं।

श्री कमलापति त्रिपाठी : दुर्भाग्य यह है कि आप ने कभी सरकार में काम नहीं किया है, हम को करने का मौका मिला है ।

श्री इन्द्रजीत गुप्त : आप का दुर्भाग्य मुझे मालूम है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हमारी नजर में तो मंत्री कैजुअल होते हैं, लेबर तो परमानेन्ट होती है ।

श्री कमलापति त्रिपाठी : लेबर के सम्बन्ध में मैं एक बात कहना चाहता हूं—मैं विशेष रूप से लेबर लीडरों से और आप सब से निवेदन करना चाहता हूं और आप के माध्यम से अपने श्रमिक भाइयों से भी निवेदन करना चाहता हू—ट्रेड यूनियन का मूवमेन्ट भी ठीक है और अधिकारों की बात भी ठीक है, लेकिन उन को अपने कर्त्तव्यों की बात भी सोचनी चाहिये । अगर मजदूर अपने कर्त्तव्य का पालन नही करता है तो अपने अधिकारों से भी वंचित होता है—यह देखने की बात है । अधिकार तो परिणाम हैं कर्त्तव्यों की पूर्ति का—यह माना हुआ सिद्धान्त है लोकतन्त्र का । लेकिन ट्रेड यूनियनिज्म में राजनीति को घुमेड देना और जो बडी तेजी से घुस गई हैं, सारा पोलिटीकलाइज किया जा रहा है ....

श्री एस० एम० बनर्जी : शर्मा जी ने घुसेड़ा है । इंटक के रहने से राजनीति नहीं रहती है और इंटक के न रहने से राजनीति आती है ।

श्री कमलापति त्रिपाठी : इस को पोलिटिकलाइज करने से मजदूरों का फायदा नहीं होगा । सेबोटाज, वायलेंस, तोड-फोड़, डराने-धमकाने या हिंसा से उन का लाभ नहीं होगा । ट्रेड यूनियन मूवमेन्ट का अर्थ है आर्गनाइज्ड लेबर । लेकिन इस देश की जनसंख्या के अनुपात में हमारे यहां आर्गेनाइज्ड लेबर है कहां, मुश्किल से 50–60 लाख होंगे । सारे देश में कुल मिला कर आर्गेनाइज्ड लेबर 50–60 लाख होंगे या ज्यादा से ज्यादा एक करोड़ होंगे ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : एक करोड़ से कम हैं ।

श्री कमलापति त्रिपाठी : जब कि हमारी आबादी 56 करोड की है । यह शक्ति संगठित है और संगठन में शक्ति है—संघे शक्ति कलोयुगे—अब उस की बुनियाद को दबाकर जो चाहते हैं, वे अधिकार मनवा लेते हैं, जो चाहते है रियायत ले लेते हैं और उन को हमारे माननीय सदस्यों का नेतृत्व प्राप्त हो जाता है । मुझे उस में आपत्ति नहीं है, उन की मागो की तरफ ध्यान देना चाहिये, लेकिन साथ साथ यह भी देखना चाहिये कि हमारे देश की वर्तमान परिस्थिति मे—आर्थिक स्थिति मे किस सीमा तक इस को बढ़ाते चले जाये । जहा आप खुद कहते हैं कि यहां की 42 प्रतिशत जनता पावर्टी लाइन के नीचे हैं और यह भी आप कहते हैं कि बहुत बडी जनसंख्या ऐसी है जिस की परचेजिंग पावर बिलकुल नहीं है और जो करोडों की संख्या में हैं ...

श्री इन्द्रजीत गुप्त : किस का दोष है ? 28 वर्षों के बाद किस का दोष है ?

श्री कमलापति त्रिपाठी : इस बहस मे आने मे मुझ कोई आपत्ति नहीं होगी, जो बहस करनी हो कर लीजिये । लेकिन अपनी भावनाओ को व्यक्त करने का मुझे पूरा अधिकार है—

Please don't disturb me. Please be kind enough; please be generous.

मान्यवर, मैं कह रहा था कि आप इस तरफ भी ध्यान दें—आर्गेनाइज्ड लेबर जो कुछ करती है—उससे और जो गांव में रहने

वाली लेबर है, जो भूमिहीन हैं, जिन के लिये हम और आप रोज-रोज प्रयास करते जा रहे हैं, जिनकी संख्या 55–60 प्रतिशत है—यह भी सत्य है कि इनमें काम करने के लिये जो लोग आते हैं वे भी उन्हीं क्षेत्रों से आते हैं, इनके ही भाई-भतीजे या परिवार के लोग होते हैं...

क्या कहा, आपने ?

एक माननीय सदस्य : कुछ नहीं, उनकी आपस में बात हो रही है।

श्री कमलापति त्रिपाठी : बनर्जी साहब भी हमारे पुराने चेले हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : बनर्जी साहब कहते हैं कि उनके गुरू कोई नहीं हैं, वे तो सिर्फ गुरु-घंटाल बनाते हैं।

श्री कमलापति त्रिपाठी : ऐसा घंटाल मुझे भी बहुत बार इन्होंने बनाया है। ऐसे चेलों से भगवान बचाये, वाजपेयी जी। .. (व्यवधान) ..

मान्यवर, मैं यह निवेदन कर रहा था कि इस समस्या पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है कि जहां हम इस बात की चेष्टा करें कि उनके अधिकारों की रक्षा हो, संरक्षण हो, वहां इस बात की तरफ़ भी ध्यान रखें कि हमारे जो उत्तरदायित्व हैं उनकी पूर्ति भी होनी चाहिये, गो-स्लो या जिस तरीके से वे काम कर रहे हैं, अगर ऐसा चलेगा तो इसमें फिर रोजी-रोटी का सवाल पैदा होगा, कब तक चलेगा, इस की तरफ भी उनके ध्यान देने की आवश्यकता है।

अब मैं दो-तीन बातें निवेदन करना चाहता हूं—यहां बार बार कहा गया है कि यात्रियों की सुविधा के लिये जो सुविधायें रेल के डिब्बों में दी जाती हैं, उनकी बड़ी-भारी चोरी होती है, गाड़ियां समय पर नहीं पहुंचती हैं। समय का पालन मैं मानता हूं कि बहुत आवश्यक है। और यह भी मानता हूं कि समय का अपालन बड़ा भारी मात्रा में हो रहा है। मैं स्वयं इसका भुक्तभोगी हूं, किसी माननीय सदस्य की बात का उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है। और उसके कारण बहुत से हो सकते हैं। समय पर कमी पड़ गई, इसलिये भी पड़ गई कि 1974 में शुरू से ही आन्दोलन छिड़ गया, हड़ताल भी हो गई, कोयले की कमी हो गई, ट्रेनें भी बन्द हो गईं। सबसे बड़ा कारण यह बताया जाता है कि चेन पुलिंग का रोग बहुत बढ़ा। होज पाइप निकालने का काम बहुत बढ़ गया और अब भी हो रहा है। और कुछ प्रदेशों में बहुत बड़ा हुआ है। और हमारे प्रदेश में बहुत बड़ा रोग है, दूसरे किसी को दोष मैं नहीं देता। माननीय नवल किशोर बाबू बैठे हुए हैं, बिहार भी कम नहीं है। अब इसके लिये चेष्टा करने की आवश्यकता है और इसमें आप सब के सहयोग की जरूरत है। हम कोशिश कर रहे हैं कि इस की सुरक्षा का इन्तजाम किया जाय और समय पर गाड़ियां पहुंचायी जायें। रेलवे विभाग की ओर से एक अभियान भी चलाया जा रहा है कि गाड़ियां समय से चल सकें। मैं मानता हूं कि गाड़ियों के समय से न चलने से लोगों को बहुत तकलीफ हो जाती है, काम बिगड़ जाता है, कई बार मुझे भी ऐसा लगा कि मैं समय पर मीटिंग में नहीं पहुंच पाऊंगा, एक, एक घंटा गाड़ी लेट पहुंची है। तो इन पर ध्यान दें, यह उचित ही है।

बिना टिकट यात्रा की बहुत चर्चा की गई और यह एक बड़ा भारी रोग है और इसका मुकाबला करने के लिये कोई उपाय अगर माननीय सदस्य बता सके पार्लियामेंटरी कंसल्टेटिव कमेटी बता सके तो अच्छा ही है। हमें तो यह लगता है कि बिना टिकट यात्रा करने के लिये खाली पुलिस से और खाली मैजिस्ट्रेटों के सहयोग से काम नहीं चलेगा जब तक कि जनता की ओर से इस बारे में सहयोग न मिले। इस बारे में रेलवे कर्मचारियों का भी सहयोग चाहिये। इस बिना टिकट यात्रा से रेलवे को बड़ा भारी नुकसान होता है। जो यह कहा जाता है कि रेलवे कर्म-

[श्री कमलापति त्रिपाठी]

चारी पैसा लेकर भ्रष्टाचार कराते हैं तो मैं इससे इंकार नहीं करता। मुमकिन है कि ऐसा होता हो। इतना बड़ा विभाग है, सभी तरह के लोग हो सकते हैं। कहा गया कि कर्मचारी मिल कर चोरियां भी कराते हैं। अभी आप के सामने एक सवाल आया था जिसके उत्तर में बताया गया कि आर० पी० एफ० के लोग ही उन चोरियों में शरीक हो गये थे। तो यह प्रमाण सब सामने हैं, और इसलिये यह कहना कि रेलवे कर्मचारी भ्रष्टाचार नहीं करते, यह मैं नहीं मानता। लेकिन उसमें जन-सहयोग भी प्राप्त होना चाहिये और इन लोगों से भी अपील की जाय कि जो इस तरह की कार्यवाही होती है उसको रोकने की कोशिश की जाय। जनता का, सरकार का, प्रादेशिक सरकारों का और पुलिस का इन सबके सहयोग के लिये एक योजना बनाने की चेष्टा हम कर रहे हैं। रेलवे बोर्ड इस बारे में जागरूक है।

श्री भागवत झा आजाद (भागलपुर) इसीलिये इतना अच्छा परिणाम रेलवे को मिल रहा है।

श्री कमलापति त्रिपाठी : यह तो 10 वर्ष का रोग रहा है। एक महीने भर में हमारे सर पर क्यों पटके दे रहे हैं।

श्री भागवत झा आजाद आपके मत्थे नहीं, बल्कि रेलवे बोर्ड के। आप कैजुअल हैं, वह परमानेंट है।

श्री कमलापति त्रिपाठी कैजुअल हर पालियामेंट का मेम्बर है। अभी 1976 में हम सब कैजुअल बनेंगे। इसलिये हम सब को मिल कर सोचना है और इस कमी को दूर करना है। इस बात की कोशिश की जाय कि किस तरह से इस कमी को दूर किया जाय।

श्री शशिभूषण मिश्र (इलाहाबाद) : रेलवे बोर्ड की क्या आवश्यकता है।

श्री कमलापति त्रिपाठी : बात यह है कि रेलवे बोर्ड की क्या आवश्यकता है यह हम को देखने दीजिये। और रेलवे बोर्ड को अगर खत्म कर दिया जाय तो उसका विकल्प क्या है यह भी हमारे सामने रख दें। आखिर यह कहने से कि बोर्ड को खत्म कर दो, इससे तो काम नहीं चलेगा। जनता के हित में जो कुछ हो करो। सदन चाहेगा कि रेलवे बोर्ड खत्म हो तो कोई रेलवे बोर्ड को रख नहीं सकता। और अगर जनता के हित में रेलवे बोर्ड नहीं है तो उसे जाना चाहिये। और अगर जनता का हित उससे सम्बद्ध होता है तो रहना चाहिये। और अगर नहीं तो कोई उसका विकल्प सामने आना चाहिये, और यह भी देखना चाहिए कि काम कैसे होगा क्योंकि इतना बड़ा विभाग है। हमारे देश में यह एक डिवीजन है लेबर का।

अब यह कह देना कि रेलवे बोर्ड मिनिस्टर के ऊपर हावी हो जाता है तो अगर आप का ऐसा कोई बेवकूफ मिनिस्टर है, निकम्मा और जड मंत्री है जिसके कोई बुद्धि न हो, दब्बू हो तो निश्चय ही उसके ऊपर हावी हो जायेगा। नहीं तो सारी शक्ति निहित है मिनिस्टर में। कोई कारण नहीं है कि वह उस पर हावी हो। और आप जब इतना सहयोग देने वाले हैं तो कोई कारण नहीं है कि मैं दब्बू बनूं।

दुर्घटना के सम्बन्ध में माननीय लक्ष्मी-नारायण पांडेय ने कहा कि 1970 में बहुत बड़ी दुर्घटनायें हुई हैं। मैंने उनको देखा है।

प्रो० मधु दंडवते (राजापुर) विक्टिमाइजेशन भी तो हुआ है।

श्री कमलापति त्रिपाठी : विक्टिमाइजेशन हम नहीं होने देंगे। अगर आप कोई केसेज मुझे देंगे तो आपसे बात करके उन पर कार्यवाही की जायेगी। यह ऐलान हो चुका है कि विक्टिमाइजेशन नहीं होना चाहिए। लेकिन जो अपराधी हैं उन्हें दंडित होना चाहिये।

मैं दुर्घटनाओं के बारे में यह कह रहा था कि 1952-53 में यह दुर्घटनायें थीं 1686 और 1973-74 में घट कर 782 पर उतर आयी। तो मनुष्य की लापरवाही से भी दुर्घटनायें हो जाया करती हैं और उन्हें बचाने की कोशिश की जा रही है।

मुझे बहुत दुख हुआ इस बात का हमारे माननीय हनुमन्तैया जी बैठे हुए हैं वह वरिष्ठ सदस्य हैं उन से निवेदन करना चाहता हूं कि वह भी और जैसा मैंने पहले कहा कि मैं भी एक ऐसी पीढ़ी के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं से सम्बन्ध रखते हैं और उस युग से जिसके सामने भारत की एक कल्पना रही है और भारत को एक मूर्तरूप देखा है। उसमें दक्षिण उत्तर पूर्व और पश्चिम की बात हमारे दिमाग में कभी नहीं आई। हमने देखा हमारा देश ऐसा है जिसके चरणतल में समुद्र बहता है जिसके मस्तक पर हिमगिरि है, एक हाथ उसका आसाम तक फैला हुआ है, दूसरा गुजरात तक फैला हुआ है। एक देश है, एक राष्ट्र है, एक राष्ट्र निवास करता है चाहे धर्म कुछ हो भाषा कुछ हो और एक मां की सब सन्तान हैं। यह कल्पना थी और इसको लेकर ही बहुत से युवकों ने अपने प्राण भी दिये फांसी पर चढ़े गोलियां खाई बहुत से सार्वजनिक कार्यकर्ता जेल भी गये। अब हमारे माननीय हनुमन्तैया जी ने कुछ दक्षिण उत्तर की बात कही। मुझे खेद है कि बिना चीज को जाने हुए उन्होंने इस बात को कहा। हमने देखा कि 368 करोड़ के ऊपर अलाटमेंट हुआ था प्लानिंग कमीशन की ओर से। उस में से 25 करोड़ काटा गया मिड टर्म ऐप्रेजल में। जब 25 करोड़ रु० कटा तो सारी योजनाओं के ऊपर जो पैसा बांटा गया था उस के अनुसार सब में कमी की गई। इस योजना पर भी 27 लाख रुपये की कमी की गई। दक्षिण रेलवे को आवंटित 5 करोड़ 40 लाख रुपये में से नये रेल लाइन के खर्च पर केवल 27 लाख रुपये की कमी इस योजना में की गई थी। क्योंकि सब में से काटा है और पैसा नहीं था इसलिये 25 करोड़ रुपये की कमी हुई। अब यह कहना कि सब पैसा काट कर उत्तर में ले गये और कहना कि मैं पेरोकियल नहीं हूं घोर पेरोकियल होने का परिचय आपने दिया और मुझे बड़ी तकलीफ इस बात की है कि एक ऐसे व्यक्ति के सम्बन्ध में जो आज संसार में नहीं है और जिसने काम किया है उस पर इस प्रकार का लांछन लगाना यह थोड़े दुःख की बात है। मैं समझता हूं कि ऐसी बात उन्हें नहीं कहनी चाहिए थी।

SHRI K. HANUMANTHAIYA (Bangalore): Just as you said 'I will fulfil all the promises made by the previous Minister, Shri Lalit Narayan Mishra', if you say so in regard to the plans approved by the House and in regard to lines and conversions in my time, that is enough. It is not a question of parochialism. We do not differ on the question of all-India feeling. It is a question of implementation of the assurances.

SHRI KAMLAPATI TRIPATHI: I differ with you. There was no question of south-north. This is a poison which you tried to spread.

SHRI K. HANUMANTHAIYA: Let us not argue on that point because it is common ground. I do not want you to tell me....

SHRI KAMLAPATI TRIPATHI: I do not agree with you.

SHRI K. HANUMANTHAIYA: The real question is whether the plan expenditure has been distributed so that all parts of the country get justice. Therefore, it is not a question of theory.

श्री कमलापति त्रिपाठी : मैं समझता हूं कि बहुत अनुचित बात आपने कही और यह बात नहीं कहनी चाहिए । उन के ऊपर एक प्रकार का लाछन लगा देना यह ठीक नहीं था ।

SHRI K. HANUMANTHAIYA: Do not misuse what I have said yesterday. What I am discussing only administration, not Shri Lalit Narayan Mishra personally. If you want to shut my mouth by saying that everything that has taken place in these two years is all right, it is a different matter. We have to discuss administration. I am not casting aspersions on anybody.

SHRI KAMLAPATI TRIPATHI: All right. I have noted your explanation.

अध्यक्ष महोदय : काफी समय हो गया है, अब आप खत्म कीजिये ।

प्रो० नारायण चन्द पराशर : यह बहुत जरूरी प्वाइन्ट है, इस का क्लेरिफिकेशन होना चाहिए ।

श्री कमलापति त्रिपाठी : एक बात और कहना चाहता हूं और वह यह है कि श्री हनुमन्तैया ने पंचशील का उपदेश दिया । मैं प्राचीन संस्कृति का भक्त हूं और मुझे पता है कि भगवान बुद्ध ने पंचशील का उपदेश दिया था इस जगत के लिए और परलोक में जाकर निर्वाण प्राप्त किया ।

प्रो० मधु दंडवते : इसके बाद बाण्डुंग में वह हुआ ।

श्री कमलापति त्रिपाठी : इस के बाद बाण्डुंग में हुआ जैसा कि आप कह रहे हैं । हमने अन्तर्राष्ट्रीय नीति का आधार उसे स्वीकार किया है और अब रेलवे में पंचशील का इन्होंने बताया कि ये पांच काम करो । यह इनका अनुभव है और ये रेलवे मिनिस्टर भी रहे है मगर पंचशील में से एक शील को भी कार्यान्वित इन्होने नहीं किया लेकिन हमको इनका आशीर्वाद होगा ये सम्भवतः हम से उम्र में बडे होंगे .....

श्री के० हनुमन्तैया : उम्र का क्या लेना । उम्र जाति प्रान्त यह आर्गमेंट नहीं है ।

श्री कमलापति त्रिपाठी : यह हमारे देश की संस्कृति है और मैं इस बात को मानता हू आप चाहे माने या न मानें जैसा कि कहा गया है :

अभिवादनशीलस्य नित्य वृद्धोप-
सेविन.
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विधा यशो
बलं ।।

आप मानें न मानें, मैं उसे मानता हूं ।

माननीय जो उपदेश उन्होंने दिया है उसे पूरा करने की कोशिश करूंगा । श्रीमन् आपने बड़ी कृपा की जो इतना समय मुझे दिया । करीब करीब डेढ़ घंटा हो गया है और इससे पहले कि मैं इसे समाप्त करूं मैं माननीय सदस्यों का बड़ा आभार मानता हूं और उन्होंने जो सुझाव दिये है उन सभी को कार्यान्वित करने की मैं चेष्टा करूंगा । मेरा उनसे बड़ा ज्ञानवर्द्धन हुआ है और मेरी आशा है कि आपका मुझे सदा सहयोग और आशीर्वाद मिलता रहेगा ताकि जो कुछ संकल्प मैंने अपने बजट भाषण में किये हैं उन्हें कुछ सीमा तक सम्पूर्ण नहीं, तो बड़ी सीमा तक पूरा करने की चेष्टा करूंगा ।